अच्छे पाठक क्या करते हैं?

समझते हुए पढ़ने की प्रक्रिया पर जो काम हुआ है उसमें से ज्यादातर काम अच्छे पाठकों पर केंद्रित रहा है। लिहाजा हमारे लिए भी यह देखना फायदेमंद होगा कि अच्छे पाठक क्या करते हैं :

- अच्छे पाठक शब्दों का *अर्थ* तेजी से समझ लेते हैं।
- अच्छे पाठक पाठ में दिए गए संकेतों या सुरागों को देखकर अथवा अपने अब तक के ज्ञान के आधार पर *नए और अनजान शब्दों और अवधारणाओं का अर्थ* समझने की कोशिश करते हैं।
- उनके पास पढ़ने का एक *स्पष्ट मकसद* होता है। वे लगातार इस बात को आंकते रहते हैं कि उस पाठ और उसको पढ़ने से उनका मकसद पूरा होता है या नहीं।
- अच्छे पाठक *सक्रिय* पाठक होते हैं और वे लगातार सोचते रहते हैं कि वे क्या पढ़ रहे हैं।
- अच्छे पाठक पढ़ने से पहले हमेशा पाठ को *गौर से देखते* हैं। वे इस बात पर ध्यान देते हैं कि पाठ की *बुनावट* कैसी है, कौन से हिस्से हैं जो उनके लिए ज्यादा उपयोगी हैं।
- पढ़ते समय वे इस बारे में *अंदाजा* लगाते रहते हैं कि अब आगे क्या होगा।
- वे *चुनिंदा ढंग से पढ़ते* हैं, समय–समय पर अपने पढ़ने के बारे में सोचते रहते हैं – मसलन, किन चीजों को गौर से पढ़ना है, किन चीजों को फटाफट पढ़ना है, कौन सी चीजें नहीं पढ़नी हैं, कौन सी चीजों को दोबारा पढ़ना है।
- अच्छे पाठक पढ़ते समय *अर्थ गढ़ते जाते* हैं, उनमें *संशोधन करते* हैं और रह–रह कर उन पर *वाल उठाते* हैं।
- वे अपने *अब तक के ज्ञान का सहारा लेते* हैं और पाठ में दी गई सामग्री के साथ उसको जोड़कर देखते हैं।
- वे पाठ की अपनी *समझ पर नजर रखकर* जरूरत के हिसाब से उसमें बदलाव करते जाते हैं।
- अच्छे पाठक *अलग–अलग किस्म के पाठों को अलग–अलग ढंग से पढ़ते* हैं।

- जब वे कोई वृत्तांत या विवरणात्मक चीज पढ़ते हैं तो कहानी के परिवेश और पात्रों पर *बहुत ज्यादा ध्यान देते* हैं।
- जब वे किसी व्याख्यात्मक पाठ को पढ़ते हैं तो उसके मुख्य विचारों को ध्यान में रखकर एक *सार–संकलन* तैयार करते हैं या उसमें संशोधन करते हैं।

अच्छे पाठकों की समझने की प्रक्रिया सिर्फ "पढ़ने" के दौरान नहीं होती जो कि हम परंपरागत रूप मानते आए हैं। यह काम तो पढ़ने के दौरान व आने वाले विरामों के दौरान भी चलता रहता है और यहां तक कि "पढ़ाई" शुरू करने से पहले और "पढ़ाई" खत्म होने के बाद भी यह सिलसिला जारी रहता है।

स्रोत :ड्यूक एवं पीयरसन, *व्हाट रिसर्च हैज़ टू से अबाउट रीडिंग इंस्ट्रकशन,* तीसरा संस्करण, 2000, इंटरनैशनल रीडिंग एसोसिएशन, पृष्ठ 205 पर आधारित।